Bihar Board Class 12th Hindi Book Notes Chapter 6 तुमुल कोलाहल कलह में

तुमुल कोलाहल कलह में कवि परिचय जयशंकर प्रसाद (1889–1937)

जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 ई. में वाराणसी में 'सुंघनी साहू' परिवार में हुआ। इनके पिता देवी प्रसाद साहू के यहाँ साहित्यकारों को बड़ा सम्मान मिलता था। प्रसाद ने आठवीं कक्षा तक की शिक्षा क्वींस कॉलेज से प्राप्त की, परन्तु परिस्थितियों से मजबूर होकर उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा तथा घर पर ही संस्कृत, फारसी, उर्दू और हिन्दी का अध्ययन किया। किशोरावस्था में ही माता–पिता तथा बड़े भाई का देहान्त हो जाने के कारण परिवार व्यापार का उत्तरदायित्व इन्हें सम्हालना पड़ा, जिसे इन्होंने हँसते–मुस्कुराते हुए संभाला। उनका जीवन संघर्षों और कष्टों में बीता।

पर साहित्य–सृजन और साहित्य–अध्ययन के प्रति वे सदैव जागरूक रहे। सन् 1937 में इनका देहावसान हुआ। जयशंकर प्रसाद हिन्दी के बहुमूखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। वे कवि, नाटककार, कहानीकार तथा उपन्यासकार के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उन्हें हिन्दी को रवीन्द्र कहा जाता है। चित्रधारा, काननकुसुम, प्रेमपथिक, महाराणा की महत्त्व, झरना, लहर, आँसू तथा कामायनी उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं।

'कामायनी' जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य है। यह छायावाद की ही नहीं, आधुनिक हिन्दी काव्य की अमूल्य निधि है। प्रसाद के नाटक हैं–विशाख, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त आदि। कंकाल, तिली, इरावती (अधूरा) इनके उपन्यास हैं। छाया, आँधी, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल तथा आकाशदीप इनके पाँच कहानी–संग्रह हैं।

जयशंकर प्रसाद के काव्य की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं। वे छायावादी कवि हैं तथा उनके काव्य में प्रेम और सौन्दर्य का चित्रण है। प्रकृति–सौन्दर्य के भी वे अद्‌भुत चितेरे हैं। नारी की गरिमा उनके काव्यों और नाटकों में अंकित है। रहस्य भावना भी कहीं–कहीं झलकती है। उनका महाकाव्य 'कामायनी' मानवता के विकास की कथा प्रस्तुत करता है। प्रसाद के काव्य के वस्तु–पक्ष (भाव पक्ष) की भाँति उनके काव्य का कला–पक्ष भी सशक्त है। खड़ीबोली को साहित्यिक सौष्ठव प्रदान करने में उनका योगदान प्रशंसनीय है। रस, छन्द, अलंकार आदि का रणमीयता में उनका काव्य है। समग्रतः प्रसाद आधुनिक काव्य का सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।

तुमुल कोलाहल कलह में कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता में छायावाद के आधार कवि श्री जयशंकर प्रसाद के कोलाहलपूर्ण कलह के उच्च स्तर (शोर) से व्यथित मन की अभिव्यक्ति है। बिन्दु कवि निराश तथा हतोत्साहित नहीं है।. कवि संसार की वर्तमान स्थिति से क्षुब्ध अवश्य हैं किन्तु उन विषमताओं एवं समस्याओं में भी उन्हें आशा की किरण दृष्टिगोचर होती है। कवि की चेतना विकल होकर नींद के पूल को ढूँढ़ने लगती है उस समय वह थकी–सी प्रतीत होती है किन्तु चन्दन की सुगन्ध से सुवासित शीतल पवन उसे संबल के रूप में सांत्वना एवं स्फूर्ति प्रदान करती है।

दुःख में डूबा हुआ अंधकारपूर्ण मन जो निरन्तर विषाद से परिवेष्टित है, प्रात:कालीन खिले हुए पुष्पों के सम्मिलन (सम्पर्क) से उल्लसित हो उठा है। व्यथा का घोर अन्धकार समाप्त हो गया है। कवि जीवन की अनेक बाधाओं एवं विसंगतियों का भुक्तभोगी एवं साक्षी है। कवि अपने कथन की सम्पुष्टि के लिए अनेक प्रतीकों एवं प्रकृति का सहारा

लेता है यथा–मरु–ज्वाला, चातकी, घाटियाँ, पवन को प्राचीर, झुलसावै विश्व दिन, कुसुम ऋतु–रत, नीरधर, अश्रु–सर, मधु, मरन्द–मुकलित आदि।

इस प्रकार कवि ने जीवन के दोनों पक्षों का सूक्ष्म विवेचन किया है। वह अशान्ति, असफलता, अनुपयुक्तता तथा अराजकता से विचलित नहीं है।

पदों का भावार्थ 1.
तुमुल कोलाहल कलह में
मैं हृदय की बात रे मन !
विकल होकर नित्य चंचल,
चेतना थक सी रही तब,
खोजती जब नींद के पल;
मैं मलय की बात रे मन।

व्याख्या–प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ छायावाद के आधारस्तम्भ महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'तमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि इस तूफानी कोलाहल पूर्ण वातावरण में मैं हृदय का सच्चा मार्गदर्शक हूँ। व्याकुल होकर मन जब थककर चंचल चेतनाशून्य अवस्था में पहुँचकर नींद की आगोश में समाना चाहता है, ऐसे विषादपूर्ण समय में मैं चन्दन के सुगन्ध में सुवासित हवा बनकर चंचल मन को सांत्वना तथा आनंद प्रदान करता हूँ। इस प्रकार कवि को अवसाद एवं अशान्तिपूर्ण वातावरण में भी उज्ज्वल भविष्य सहज ही दृष्टिगोचर होता है।

2. *चिर–विषाद विलीन मन की*
इस व्यथा के तिमिर वन की;
मैं उषा सी ज्योति रेखा,
कुसुम विकसित प्रात रे मन !

व्याख्या–प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रणेता कवि शिरोमणि जयशंकर प्रसाद द्वारा विरचित 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है जब मनुष्य चिर–विषाद में विलीन होकर घुटन महसूस करने लगता है, व्यथा रूपी अन्धकार में भटकने लगता है उस समय मैं श्रद्धा अर्थात् आशा उसके लिए सूर्य की ज्योतिपुंज के समान पथ प्रदर्शक तथा प्रस्फुटित पुष्प के समान जीवन को आनन्दित करती हूँ।

3. *जहाँ मरु ज्वाला धधकती,*
चातकी कन को तरसती;
उन्हीं जीवन घाटियों की,
मैं सरस बरसात रे मन !

व्याख्या–प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ छायावाद के प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं।

https://www.evidyarthi.in/

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जहाँ मरुभूमि की ज्वाला धधकती है और चातकी जल के कण को तरसती है उन्हीं जीवन की घाटियों में मैं (आशा) सरस बरसात बन जाती है। कवि का भाव है कि जिन लोगों का जीवन मरुस्थल की सूखी घाटी के समान दुर्गम, विषम और ज्वालामय हो गया है, जहाँ चित्त चातकी को एक कण भी सुख का जल नहीं मिला हो उन्हें आशा की एक किरण मात्र मिल जाने से जीवन में रस की वर्षा होने लगती है।

4. *पवन की प्राचीर में रुक,*
जला जीवन जा रहा झुक;
इस झुलसते विश्व–वन की,
मैं कुसुम ऋतु राज रे मन !

व्याख्या–प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा विरचित 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जिन्हें इस अभागा मानव–जीवन ने झुलसा डाला है और जिन्हें सांसारिक अग्नि से भागने का भी कोई उपाय नहीं है, ऐसे दु:ख–दग्ध लोगों को मैं आशारूपी वसंत की रात के समान सुख की आँचल हूँ। उनके झुलसे मन को हरा–भरा बना कर फूल–सा खिला देती हूँ।

5. *चिर निराशा नीरधर से,*
प्रतिच्छायित अश्रु सर में;
मधुप मुखर मरन्द–मुकुलित,
मैं सजल जलजात रे मन !

व्याख्या–प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ छायावाद के प्रवर्तक महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा विरचित 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता से उद्धत हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में प्रेम, देश–प्रेम, मानवता, प्रकृति सौन्दर्य और करुणा के अद्भुत चितेरे कवि शिरोमणि जयशंकर प्रसाद कहना चाहते हैं कि मानव जीवन आँसुओं का सरोवर है। उसमें पुरातन निराशारूपी बादलों की छाया पड़ रही है। उस चातकी सरोवर में आशा एक ऐसा सजल कमल है जिस पर भौरे मँडराते हैं और जो मकरन्द से परिपूर्ण हैं। कवि की इन पंक्तियों में हृदय की अनुभूति, संगीत मधुरिमा, कला की विद्ग्धता सहज ही दृष्टिगोचर होती है।